शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

- डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव*

भारत में सदैव ही छात्रों ने राष्ट्र की रक्षा के लिए न केवल अपने उत्तरदायित्व का कुशलता से निर्वहन किया है अपितु अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना तन-मन-धन से राष्ट्र के लिए समर्पित रहे हैं। छात्र राजनैतिक चेतना के उन्नायक और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अविभाज्य अंग रहे हैं। 1858 के बाद ब्रिटिश शासन और उसकी नीतियों में जब व्यापक परिवर्तन हुए और ब्रिटिश नीतियाँ अपेक्षाकृत अधिक प्रतिक्रियावादी हो गई, तब भारत का शिक्षित वर्ग व्यापक तौर पर ब्रिटिश नीतियों का पहले की अपेक्षा अधिक विरोधी हो गया। भारत के समकालीन नव शिक्षित वर्ग ने राजनीतिक शिक्षा का प्रसार किया और देश में राजनीतिक संघों की स्थापना की। लार्ड लिटन के चार साल

के कार्यकाल (1876-1880) को भारत में ब्रिटिश शासनकाल का सबसे असफल काल कहा गया है। जब 18 अप्रैल, 1880 में लिटन ने त्यागपत्र दिया, तब 'बंगाली' पत्र ने लिखा : ''लार्ड लिटन को इस बात का श्रेय मिलना चाहिए कि उनकी दमनकारी नीतियों से इस देश के सार्वजनिक जीवन को उत्तेजना मिली और इस उपकार के लिए निश्चित रूप से लार्ड साहब के प्रति हमारे देशवासी कृतज्ञ होगें।''[1] लार्ड लिटन के कार्यकाल में 1876 में इण्डियन सिविल सर्विस की प्रतियोगिता परीक्षा के लिए निर्धारित 21 वर्ष की आयु सीमा को घटाकर 19 वर्ष कर दिया गया। युवा छात्रों में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।[2] सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने सरकार की इस प्रतिक्रियावादी नीति को चुनौती देने का निश्चय किया तथा 1877 में तात्कालिक उत्तर-पश्चिम प्रदेश आगरा एवं अवध के अनेक नगरों जैसे- आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, मेरठ, अलीगढ़, लखनऊ, बनारस आदि का भ्रमण किया।

सन् 1883 में इलबर्ट विधेयक ने भारतीय युवकों की आँखें खोल दी। सन् 1884 में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने पुन: उत्तर भारत का दौरा किया। आकलैण्ड कालविन ने समकालीन युवाओं में आक्रोश को देखते हुए कहा कि भारत के जनता की ''सूखी हड्डियों में एकाएक जीवन का संचार हो गया।''[3] सन् 1885 में कलकत्ता निगम के अध्यक्ष सर हेनरी हेरिसन ने स्वीकार किया: ''तरूण भारत के साथ व्यवहार करने में यह समझना बहुत बड़ी गलती होगी कि ये संख्या में नगण्य हैं। जो भावनाएँ इस समय दो लाख व्यक्तियों के मन में हिलौरे ले रही हैं वही आगे बीस करोड़ लोगों के मन में बहेंगी। हम समझें कि शिक्षित भारतीयों के साथ हम जो व्यवहार कर रहे हैं, वह उसी वर्ग तक सीमित नहींरहेगा।''[4]

फिलिप जी0 आल्टवाच के अनुसार 1880 के दशक में कुछ छात्रों ने भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा इंग्लैण्ड में कराने का तीव्र विरोध किया।[5] माइरन वीनर ने लिखा है कि सन् 1907 से 1917 के मध्य पकड़े गए 186 क्रान्तिकारियों में 68 विद्यार्थी थे।[6] सन् 1914 में जार्ज एस0 अरूनदाले ने अपने लेख इंडियन स्टूडेन्ट्स एण्ड पालिटिक्स् में लिखा है कि ''वर्तमान में छात्र और राजनीति के मध्य सम्बन्ध अत्यधिक चर्चा वाला प्रश्न बन गया है।''[7] छात्रों द्वारा हिंसात्मक मार्ग पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि ''बुराई द्वारा अच्छाई को प्राप्त नहीं किया जा सकता और हिंसा प्राकृतिक समरसता की भावना पर प्रहार है।''[8] उन्होंने रिजले के परिपत्र की चर्चा की जिसमें छात्रों को किसी भी राजनैतिक बैठक में भाग लेने से प्रतिबन्धित किया गया। अरूनदाले के मतानुसार वे कालेज छात्र जो राजनैतिक प्रश्नों को समझने में परिपक्व हैं, समस्त दलों के उत्तरदायी सार्वजनिक लोगों के भाषण सुनकर उनका अपनी बुद्धि अनुसार आकलन करें। कालेज के प्राध्यापक भी मीटिंग में भाग लेकर छात्रों को वास्तविक तथ्यों से अवगत करायें ताकि छात्र भ्रमित न हो।[9]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

4 अक्टूबर, 1857 को तत्कालीन कच्छ रियासत के माण्डवीं कस्बे में एक निर्धन परिवार में जन्मे श्यामकृष्ण वर्मा छात्र क्रान्तिकारी आन्दोलन के पितामह थे और वे आक्सफोर्ड की स्नातक की उपाधि प्राप्त करने वाले तथा वहीं अध्यापक नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीयों में से एक थे।[10] श्याम कृष्ण वर्मा ने दिसम्बर 1904 में अंग्रेज दार्शनिक हरबर्ट स्पेंसर की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर तथा स्वामी दयानन्द की स्मृति में भारतीय छात्रवृत्ति देने की योजना बनाई। उन्होंने इंडिया होमरूल सोसाइटी की स्थापना की। इस सोसाइटी ने अपना प्रसिद्ध पत्र इंडियन सोसियोलाजिस्ट[11] निकाला जिसके प्रथम अंक में श्यामजी ने भारतीय छात्रवृत्ति की नये प्रकार की योजना प्रकाशित की, शर्त थी कि ''छात्रवृत्ति स्वीकार करने वाला कोई भी भारतीय स्नातक भारत लौटने के बाद ब्रिटिश सरकार के मातहत कोई पद, धन-राशि या कोई अन्य सेवा स्वीकार नहीं करेगा।'' छात्रवृत्ति से लाभान्वित होने वाले छात्रों से अपेक्षा की गई थी कि वे भारत की आजादी के लिए कार्य करेंगे।[12]

ब्रिटेन में 'इण्डिया ऑफिस' छात्रवृत्ति की इस योजना के पीछे के खतरों के प्रति सतर्क हो गया। उसने भारत सरकार को निर्देश दिया कि वो इन छात्रवृत्तियों को प्राप्त करने वाले युवकों के पूर्व चरित्र का पता लगाये।[13] इन छात्रवृत्तियों के लिए अब्दुल्ला एल0 मामुन सुहरावर्दी, सैयद अब्दुल मजीद, शेख अब्दुल अजीज, विनायक दामोदर सावरकर, पी0 एन0 मुखर्जी, मुइनुद्दीन अहमद, के0 एल0 वर्मा, पी0 सी0 सेन, आर0 जी0 प्रधान, परमेश्वर लाल और स्वरूप चन्द्र मुखर्जी का चयन किया गया था।

इग्लैण्ड में भारतीय छात्रों को हर पग पर जाति भेदभाव तथा ब्रिटिश जासूसों से परेशान होना पड़ता था। लंदन में तो सामान्य छात्रों को भी ब्रिटिश दृष्टिकोण से असहजता महसूस होती थी। उसके निवारण हेतु श्यामजी कृष्ण ने लंदन में एक मकान खरीदा जिसका नाम ''इंडिया हाउस'' रखा गया और जिसका उद्घाटन 1 जुलाई, 1905 को एच0 एम0 हिंडमैन ने किया। 'इंडिया हाउस एक प्रकार का छात्रावास था जहाँ भारतीय विद्यार्थी बहुत कम शुल्क देकर रहते थे। उस समय लंदन में रह रहे भारतीयों का यह मिलन स्थल भी था।[14] भारत सरकार की एक रिर्पोट के अनुसार श्यामजी कृष्ण द्वारा स्थापित इंडिया हाउस 1906 और उसके बाद के वर्ष में राजद्रोह का एक कुख्यात केन्द्र बन गया था।[15] 9 मई, 1905 को 1857 के विद्रोह की वर्षगाँठ के अवसर पर बैरिस्टर जे0एम0परिख की अध्यक्षता में एक समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ0डी0ई0परेरा ने कहा: ''यद्यपि शिक्षित व्यक्ति को रक्तपात का विचार पसन्द नहीं आता किन्तु केवल रक्तपात द्वारा ही भारत स्वतंत्र हो सकता है। यदि हमे स्वतंत्रता के लिए लड़ना और मरना है तो यह गुलामों की जिन्दगी जीने से अधिक अच्छा है।''[16]

जनवरी 1902 में सावरकर ने फर्गुसन कालेज में प्रवेश लिया। सन् 1905 में बंगाल विभाजन ने भारतीय छात्रों में जबरदस्त आक्रोश को जन्म दिया। अक्टूबर 1905 को एक सभा को सम्बोधित करते हुए सावरकर ने जनता से विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया। निर्धारित कार्यक्रमानुसार 7 अक्टूबर 1905 को गाड़ी में भरकर एक स्थान पर विदेशी वस्तुएँ व विदेशी कपड़े इकट्ठे किये गये और सार्वजनिक रूप से उसमें आग लगा दी गई। सावरकर ने अपने ओजस्वी भाषण में छात्रों को दशहरा के अवसर पर विदेशी वस्तुओं की होली जलाने को प्रेरित किया।[17] परिणामस्वरूप सावरकर फर्गुसन कालेज से निष्कासित कर दिये गये। ''विदेशी वस्तुओं की होली जलाने तथा एक सरकारी सहायता प्राप्त कालेज से एक छात्र को निष्कासित करने की भारतवर्ष में पहली घटना थी।''[18] तिलक तथा अन्य राष्ट्रवादी नेताओं ने निष्कासन की भर्त्सना की। परिणामस्वरूप सावरकर को विश्वविद्यालय से बी0ए0 की परीक्षा देने की अनुमति मिली तथा वे उत्तीर्ण हुए।

श्याम कृष्ण वर्मा ने सावरकर को ''शिवाजी छात्रवृत्ति'' प्रदान की। सन् 1906 के अन्त में सावरकर ने ''फ्री इंडिया सोसायटी'' का गठन किया जो ''अभिनव भारत'' संस्था के अनुरूप थी। इंग्लैण्ड में सावरकर का प्रमुख कार्य भारतीय छात्रों व युवकों को संगठित कर उन्हें देशभक्ति के लिए प्रेरित करना था। इनमें प्रमुख थे- भाई परमानन्द, सैंट जॉन्स कॉलेज, आक्सफोर्ड के छात्र लाला हरदयाल, सरोजनी नायडू के भाई वीरेन्द्रनाथ

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

चट्टोपाध्याय जो मिडिल टेम्पिल इन में कानून की शिक्षा ले रहे थे, बी0 बी0 एस0 अय्यर जो बैरिस्ट्री की डिग्री लेने गये थे, ज्ञानचन्द्र वर्मा जो कानून पढ़ने गये थे, सेनापति बापट, एडिनवरा में इंजीनियरिंग के छात्र, डब्ल्यू0 बी0 फड़के जो आइ0 सी0 एस0 की तैयारी हेतु गये थे व इंजीनियरिंग के छात्र मदनलाल ढींगरा।

इग्लैण्ड पहुचने के 6 माह में ही सावरकर ने मैजिनी की जीवनी 'जोसफे मैजिनी' का मराठी में अनुवाद किया। इस पुस्तक के माध्यम से सावरकर ने ''राजनीति में भिक्षावृत्ति की निन्दा की। वेलेन्टीन सिरोल ने इस अनुवादित पुस्तक को ''राष्ट्रवादी पाठ्यपुस्तक की संज्ञा दी। पुस्तक की प्रस्तावना जनता में इतनी लोकप्रिय हो गई कि ब्रिटिश सरकार ने पुस्तक को जब्त कर लिया तथा 1946 में इस पर से प्रतिबंध हटा।''[19] सावरकर का ग्रन्थ '1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर' इतना प्रसिद्ध हुआ कि युवा क्रान्तिकारी इसे ''सशस्त्र क्रान्ति के तत्त्वज्ञान की गीता'' कहकर पुकारने लगे।[20]

सावरकर ने 10 मई, 1907 का दिन स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णजयन्ती के रूप में मनाया। अनेक स्थानों पर अंग्रेजों तथा भारतीय छात्रों के मध्य मुठभेड़ें हुई।

लाला हरदयाल भी छात्र चेतना के अग्रणी थे। स्टेनफोर्ड से इस्तीफा देने के बाद हरदयाल बर्कले गये जहाँ उन्होंने छात्रों का एक क्लब गठित किया और ब्रिटिश विरोधी भावनायें उत्पन्न करने के उद्देश्य से भाषण दिये। धनवान कृषक भाई ज्वालासिंह ने छात्रवृत्ति के लिए धन दिया और गुरु गोविन्द सिंह छात्रवृत्तियों को देने की घोषणा की गई।

जिन छात्रों की क्रान्तिकारी गतिविधियों के परिणामस्वरूप उन्हें फाँसी हुई उनमें प्रमुख थे–मदनलाल ढींगरा जिन्हें छात्र विरोधी कर्जन वायली की हत्या के जुर्म में फाँसी हुई। कर्जन वायली की हत्या के उपरान्त ब्रिटिश सरकार ने भारतीय छात्रों के विरुद्ध कठोर कदम उठाये। इंडिया ऑफिस का विचार था कि भारत से इंग्लैण्ड जाने वाले छात्रों पर नियन्त्रण कड़ा कर दिया जाए। इंग्लैण्ड जाने वाले छात्रों के लिए स्थानीय सरकार से सर्टिफिकेट लेना अनिवार्य था। इंडिया ऑफिस में छात्र केन्द्र स्थापित किया गया। बाहरी रूप से उसका कार्य भारतीय विद्यार्थियों की सहायता करना था, परन्तु वह विद्यार्थियों की जासूसी करता था।[21] अमरीका में मैकेनिकल इंजीनियरिंग पढ़ने गये विष्णु गणेश पिंगले को लाहौर षडयंत्र केस में फाँसी की सजा हुई। संयुक्त प्रान्त में छात्र राजनीतिक चेतना आग की तरह फैली।

1907 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एल0एल0बी0 के छात्र सुन्दरलाल[22] को जिला अधिकारी की मनाही के बावजूद ''शिवा जी जंयन्ती'' में भाषण देने और गर्म राजनीति में सक्रिय भागीदारी के कारण पहले हिन्दू बोर्डिंग हाउस से निकाला गया फिर उनकी एल0एल0बी0 की फीस वापस करके उन्हे वि0वि0 से निष्कासित कर दिया गया।[23] सेन्ट्रल स्कूल के छात्र नरेन्द्र देव ने स्वदेशी का नेतृत्व किया था। 16 दिसम्बर, 1913 को पं0 विशन नारायण दर ने केनिंग कालेज के स्टूडेन्ट्स एसोसिएशन में अपने भाषण में कहा कि विद्यार्थियों को समाज की सेवा करने तथा समाज सुधारों हेतु आगे आना चाहिए।[24]

सैडिसन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार : ''शचीन्द्र नाथ सान्याल के साथियों ने 1913 की शरद ऋतु में बंगाली स्कूलों एवं कालेजों में कई राजद्रोहात्मक पर्चे बांटे और अन्य पर्चों को डाक द्वारा अन्यत्र भेजा।''[25] सन् 1914 में लखनऊ के मेडिकल कालेज के छात्रों ने दो छात्रों के निष्कासन के विरूद्ध सफल हड़ताल की। 26 फरवरी 1914 में आगरा मेडिकल कालेज और उसके बाद लाहौर के मेडिकल छात्रों ने भी लखनऊ के छात्रों के समान हड़ताल की। ईसाइयों द्वारा संचालित कालेज में अनिवार्य रूप से बाइबिल पढ़ने के विरूद्ध भी छात्रों ने आन्दोलन किया।[27] जे0सी0दीक्षित ने लिखा है ''राजनीतिक क्षेत्र में छात्रों की संगठित हड़तालों के उद्भव से संयुक्त प्रान्त का राजनीतिक वातावरण गरम हो उठा था।[28]

सन् 1917 के प्रारम्भ में लखनऊ के क्रिश्चियन कालेज के अधिकारियों ने किसी विद्यार्थी 'महादेव की मूर्ति' हटा दी। छात्रावास में सत्यनारायण की कथा सुनने पर भी कालेज के प्रबन्धकों ने प्रतिबन्ध लगा रखा था।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

उसके विरूद्ध भी वहाँ के छात्रों ने हड़ताल कर दी।[29] 2 फरवरी, 1917 के हमदम ने लखनऊ के क्रिश्चियन कालेज के विद्यार्थियों को बम्बई के विद्यार्थियों के अनुरूप अपना संगठन बनाकर उसके विरूद्ध संघर्ष करने का परामर्श दिया।[30] 7 फरवरी, 1917 के 'अवध अखबार' ने भी यही सुझाव दिया था।[31]

प्रान्त की सरकार ने एक आदेश प्रसारित कर राजनीतिक सभाओं में विद्यार्थियों के भाग लेने पर रोक लगा दी। लार्ड पेन्टेलैण्ड का परिपत्र 559 इस संबंध में विवाद का विषय बन गया। प्रताप ने अपने सम्पादकीय में इस आदेश से असहमति प्रकट करते हुए लिखा ''विद्यार्थियों को इन राजनीतिक सभाओं में भाग लेने से न रोका जाये और न ही राजनीतिक साहित्य के अध्ययन से। यदि उन्हें रोकना है तो उन्हें सक्रिय राजनीति में भाग लेने से रोका जाए।''[32]

सन् 1917 में रुड़की कालेज के प्रिंसिपल मिस्टर वुड ने कॉलेज में दिये गये भाषण में कहा : ''यह एक संदेहरहित तथ्य है कि पूरे भारतवर्ष में, क्या विद्यालयों, क्या गाँवों में और कहीं अधिक स्पष्ट रूप से विश्वविद्यालयों में, एक कुटिल प्रवृत्ति बड़ी मात्रा में व्याप्त है जो विगत कलकत्ता कांड में देखी गयी, जिसका मै अभी उल्लेख कर चुका हूँ। इसका आशय यह है कि जो बहुत से लोग सज्जन कहलाते है वे बिल्कुल सज्जन नहीं हैं---''[33] मोती लाल नेहरू के अनुसार मिस्टर वुड का ये आक्षेप भारतीय राष्ट्रीयता पर किया गया प्रहार था।

मैनपुरी ट्रेन डकैती षड़यंत्र की 1 जनवरी, 1918 में प्रारम्भ हुई जाँच में गिरफ्तार किये गये 37 व्यक्तियों में 19 छात्र थे। 37 व्यक्तियों में 11 फरार हो गये। फरार क्रान्तिकारियों में निम्न छात्र थे-

(1) गंगा सिंह चंदेल (शाहजहाँपुर निवासी,जो आगरा के बलवन्त राजपूत कालेज के छात्र थे।)
(2) राम प्रसाद बिस्मिल (शाहजहाँपुर निवासी, मिशन हाई स्कूल के छात्र थे।)

जिन पर पर मुकदमा चला उनमें छात्रों का विवरण निम्न है-

(1) गोपनीय पुत्र भगवान दास (मिशन हाई स्कूल मैनपुरी के छात्र)
(2) करोड़ी मल पुत्र झम्मन लाल(मिशन हाई स्कूल मैनपुरी के छात्र)
(3) प्रभाकर पुत्र चक्खन लाल (ई0आई0आर0 स्कूल टुंडला के छात्र)
(4) राजाराम बाजपेयी पुत्र मुरलीधर (मिशन हाई स्कूल, शाहजहाँपुर के छात्र)
(5) कालीचरण शर्मा पुत्र जानकी प्रसाद (शाहजहाँपुर निवासी, बरेली कालेज, बरेली के छात्र)
(6) शिवचरण लाल पुत्र गंगाराम (नगरादारू, एटा के छात्र)
(7) दम्मीलाल पुत्र भिखारी लाल (अलीपुर, मैनपुरी के छात्र)
(8) चन्द्रधर पुत्र मेवाराम (चिपाती, मैनपुरी का छात्र)-34 नवम्बर 1919 की बी0एम0 किस ने अपने फैसले में निम्न छात्रों को अभियुक्त मानकर सजाएँ दी-

1. दम्मीलाल व गोपीनाथ को सात-सात वर्ष का कठोर कारावास
2. सिद्धगोपाल, चन्द्रधर, प्रभाकर, शिवचरण लाल को पाँच-पाँच वर्ष का कठोर कारावास
3. राजाराम बाजपेयी, करोड़मल को तीन-तीन वर्ष का कठोर कारावास
4. कालीचरण शर्मा को छोड़ दिया गया।

1919 में बम्बई में महामारी फैलने पर विद्यार्थियों की कॉलेज बन्द करने की माँग प्रशासन को पूरी करनी पड़ी। 1920 में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में छात्रों ने राजकीय शिक्षण संस्थाओं का जमकर बहिष्कार किया। 1919-20 में कालेजों में विद्यार्थियों की संख्या 52,482 से घटकर 1921-22 में 45,933 हो गयी। माध्यमिक स्तर पर 1919-20 में छात्रों की संख्या 1,281,810 से घटकर 1921-22 में 1,239,524 हो गयी।[35] ज्ञातव्य है कि श्याम कृष्ण वर्मा ने 1907 में कहा था ''ब्रिटिश राज के प्रति गद्दारी सिखाने वाली शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार करना चाहिए।''

1 अगस्त, 1925 को हुई काकोरी ट्रेन डकैती में 18 छात्र अभियुक्त थे जिसमे राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खाँ को फाँसी दी गयी। पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त ने तारांकित

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

प्रश्न नं0 75 दिनांक 29 अक्टूबर, 1927 के माध्यम से जानना चाहा कि काकोरी षड़यंत्र केस में दोष सिद्ध व्यक्तियों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति क्या है?[36] संयुक्त प्रान्त की सरकार की ओर से गृहमंत्री ने निम्न जानकारी प्रस्तुत की-

1. रामप्रसाद बिस्मिल : कक्षा 9 तक पढ़े
2. राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी : बनारस विश्वविद्यालय में एम0ए0 के छात्र
3. रोशन सिंह : वर्नाक्यूलर मिडिल क्लास परीक्षा
4. रामदुलारे त्रिवेदी : वर्नाक्यूलर मिडिल क्लास परीक्षा
5. योगेश चन्द्र चटर्जी : मैट्रिक तक पढ़े
6. गोविन्द्र चरण कर : ढाका कालजियट स्कूल में बी0ए0 अंतिम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की
7. बनवारी लाल : कक्षा 9 तक पढ़े
8. शचीन्द्रनाथसान्याल : क्वींस कालेज बनारस से कला की पहली परीक्षा उत्तीर्ण की
9. भूपेन्द्र नाथ सान्याल : इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बी0एस-सी0के छात्र
10. मन्मथनाथ गुप्त : बी0ए0 द्वितीय वर्ष तक अध्ययन किया
11. विष्णुशरण दुबलिस : बी0ए0तृतीय वर्ष तक अध्ययन किया
12. रामनाथ पाण्डेय : बनारस विश्वविद्यालय के छात्र
13. प्रेमकिशन खन्ना : मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की
14. रामकृष्ण खत्री : उदासीन संस्कृत विद्यालय, बनारस के छात्र
15. सुरेश भट्टाचार्य : बनारस विश्वविद्यालय में प्रथम वर्ष तक पढ़े
16. राजकुमार सिन्हा : बनारस विश्वविद्यालय के बी0एस-सी0के छात्र
17. मुकुन्दी लाल : कोई शिक्षा नहीं
18. पूर्णवेश चटर्जी : काशी विद्यापीठ के छात्र[37]

साइमन कमीशन के बहिष्कार में छात्र अग्रिम पंक्ति में रहे। बी0एच0यू0 में छात्रों ने साइमन कमीशन के विरूद्ध उग्र प्रदर्शन किया।[38] लखनऊ में भी छात्रों ने कमीशन को काले झण्डें दिखाये।

पंजाब में विद्यार्थियों को कालेज में प्रवेश लेने पर राजनीति में भाग न लेने का एक शपथ पत्र देना पड़ता था। सन् 1928 में भगत सिंह ने अपने लेख ''विद्यार्थी और राजनीति'' में इसकी आलोचना की उन्होंने लिखा '' हम यह मानते है कि विद्यार्थी का मुख्य काम पढ़ाई करना है----लेकिन क्या देश की परिस्थितियों का ज्ञान और उसमे सुधार के उपाय सोचने की योग्यता पैदा करना उस शिक्षा में शामिल नहीं है? यदि नहीं तो हम उस शिक्षा को भी निकम्मी समझते हैं जो सिर्फ क्लर्की करने के लिए हासिल की जाए.....''[39]

स्वतंत्रता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका हर मोर्चे पर सराहनीय रही। 1 नवम्बर, 1932 में लखनऊ, बरेली और फैजाबाद की जेलों मे राजनीतिक कैदियों की जो सूची प्रकाशित हुई उससे ज्ञात होता है कि फैजाबाद जिला जेल में 140 कैदी थे वे समस्त छात्र थे।[40]

सन् 1942 का ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' छात्र राजनीति चेतना का चरमोत्कर्ष था। संयुक्त प्रान्त में बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़, बनारस, जौनपुर, आगरा, शाहजहाँपुर समेत बिहार, महाराष्ट्र, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, व कर्नाटक में छात्रों ने स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया।

10 अगस्त को बलिया के सब स्कूल व कालेज बन्द हो गये और छात्रों ने नारे लगाते हुए जुलूस निकाले। स्मरण रहे कि इस जुलूस के निकालने में छात्रों ने अपनी बुद्धि से काम लिया था।[41] 11 अगस्त को पुनः छात्रों ने जुलूस निकाला। जनता भी छात्रों के साथ हो गई। सब मजिस्ट्रेट वयस ने जुलूस पर लाठी चार्ज का आदेश दिया। मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है: ''एक-एक विद्यार्थी पर बीसियों लाठियाँ पड़ी। कई विद्यार्थी बहुत सख्त घायल हुए, एक को तो इतनी चोट आई कि वह अस्पताल में शहीद हो गया।''[42]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

बलिया में ब्रिटिश सेना द्वारा जिस अमानुषिक रूप से दमन शुरू किया गया जिसमें छात्रों सहित 64 शहीद हुए उससे युवकों में रोष उत्पन्न हुआ।

गाजीपुर में भी अगस्त क्रान्ति में विद्यार्थियों ने सक्रिय भाग लिया। उन्होंने 15 अगस्त को गाजीपुर शहर में एक विराट जुलूस निकाला।[43] कोतवाली पर झन्डा फहराने हेतु जुलूस आगे बढ़ा। पुलिस ने सादात थाने पर गोलियाँ चलाई। जनता ने थानेदार व सिपाहियों सहित थाने को जला दिया। गाजीपुर में पुलिस अत्याचार से छात्रों सहित 167 व्यक्ति शहीद हुए।

1942 के आन्दोलन में ''हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों का बहुत बड़ा स्थान रहा। जब दमनचक्र चला तो फौज ने विश्वविद्यालय पर विशेष प्रहार किया। छात्र तथा छात्राओं के होस्टल जबरदस्ती खाली कराये गये। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रान्त भर में फैल गये और उन्होंने वहाँ जाकर आन्दोलन का नेतृत्व किया।''[44] इस कार्य में न केवल छात्रों वरन् कुछ अध्यापकों की विशेष रूप से भागीदारी रही जिसमें प्रमुख थे ''श्री कृपलानी, राधेश्याम, असरानी व गैरौला।''[45]

11 अगस्त, 1942 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र व छात्राओं ने एक जुलूस निकाला। यह जुलूस 'लॉ' होस्टल तक ही पहुँचा था कि उस पर पुलिस अधिकारियों ने लाठी चार्ज के आदेश दिए पर ऐसा न हो सका। छात्रों ने सभा कर 12 अगस्त को जुलूस निकालने का निर्णय लिया। 12 अगस्त के जुलूस में छात्रायें आगें थी।[46] पहले जुलूस पर कंकड़ फेके गये। फिर गोली चलाई गयी। छात्राओं ने साहस का परिचय दिया। उन्होंने तिरंगा झन्डा देने से इनकार कर दिया फिर घुड़सवारों के घोड़ों की लगाम पकड़ ली।[47] इसके उपरान्त जो गोली काण्ड हुआ उसमें कई छात्र शहीद हुए। जिनमें प्रमुख थे- लाला पदम्धर सिंह (इलाहाबाद विश्वविद्यालय का छात्र व छात्र नेता) और अब्दुल मजीद (इलाहाबाद का छात्र)।[448]

जौनपुर में जिले भर की क्रान्ति का केन्द्र किसान हाईस्कूल, प्रतापगंज हो गया। 9 अगस्त को इसी स्कूल में बैठक हुई। 10 अगस्त को शहर के विद्यार्थियों ने जुलूस निकाला। कचहरी में उन पर गोली चलाई गई, लेकिन वह पीछे नहीं हटे।

आगरा में विद्यार्थियों एवं जनता ने जुलूस निकाले और थानों पर झन्डा फहराने के प्रयास किए पर असफल रहे। इसके उपरान्त कुछ स्थानों पर तोड़-फोड़, रेल पटरी उखाड़ने, तार काटने आदि में वे सक्रिय रहे।[49]

''भारत छोड़ो आन्दोलन'' में शाहजहाँपुर के छात्रों ने अहम् भूमिका निभायी। 9 अगस्त की रात्रि को छात्र परसराम आजाद के निवास पर सम्पन्न हुई छात्रों की एक गुप्त बैठक में 10 अगस्त को नगर में जुलूस निकालने तथा हड़ताल करने का कार्यक्रम निश्चित किया गया। 9 अगस्त की रात्रि को ही छात्रों और नवयुवकों ने दीवारों, खम्भों, सरकारी कार्यालयों के बाहर सरकार विरोधी पोस्टर चिपका दिये। उन पर नारे थे : ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'', ''करो या मरो''आदि।[50]

10 अगस्त, 1942 सोमवार को प्रात: ओम प्रकाश सिंह व बसन्तलाल खन्ना के नेतृत्व में छात्रों का एक जुलूस मिशन हाई स्कूल से प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में जुलूस में लगभग 200 छात्र व युवक थे परन्तु जुलूस में आगे बेनीमाधव सत्यसभा तथा गवर्नमेन्ट हाई स्कूल के छात्र भी शामिल हो गये। थाना सदर बाजार पहुंचने पर पुलिस ने जुलूस को आगे बढ़ने से रोक दिया।[51] मजिस्ट्रेट द्वारा लाठीचार्ज के आदेश दिये गये जिसमें काफी संख्या में छात्र घायल हुए। पुलिस ने बसन्तलाल खन्ना सहित कई छात्रों को गिरफ्तार कर लिया।

भारत छोड़ो आन्दोलन में सम्पूर्ण देश में 1492 आन्दोलनकारी शहीद हुए। आन्दोलन में सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व था और आन्दोलन की छवि भी क्षेत्रीय न होकर राष्ट्रीय थी।[52] शहीद हुए आन्दोलनकारियों में 16 से 25 वर्ष तक की आयु वर्ग के छात्र सर्वाधिक थे। 1492 में मात्र 566 की आयु का पता चला है। ''इन शहीदों में 37 तो 15 वर्ष की आयु तक के ऐसे सुमन थे जो खिलने के पूर्व ही बलिवेदी पर अर्पित हो गये।''[53] वर्गो की दृष्टि से 1492 में केवल 502 शहीदों के बारे में पता चला इसमें 87 छात्र थे।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

निष्कर्ष यह है कि ब्रिटिश भारत में उच्च शिक्षा के साथ छात्रों का विद्रोह प्रारम्भ हो गया था और पराधीन भारत में शिक्षित वर्ग ने राष्ट्रीय विचारधारा विकसित करने और शिक्षा के प्रसार में अद्वितीय भूमिका निभायी। ये निर्विवाद स्पष्ट है। यद्यपि ब्रिटिश भारत में आज के जैसे छात्रसंघो का अभाव था किन्तु अपनी गतिविधियों से छात्रों ने जनता में एक नई जागृति पैदा की। छात्रों ने कांग्रेस द्वारा संचालित आन्दोलन में कभी भी बाधा उत्पन्न नहीं की। छात्र आन्दोलनो ने राष्ट्रीय आन्दोलन के पूरक की भूमिका निभायी है। शिक्षित वर्ग पर अंग्रेजी संस्कृति का प्रसारक होने का जो आरोप लगाया जाता है व पूर्णतः उचित नहीं है।

आज छात्र उनकी सही भूमिका समझने में असमर्थ हैं। आज छात्र राजनीति का मतलब छात्रसंघो का चुनाव, धन उगाही, वाहनों की आगजनी, पथराव और जिन्दाबाद-मुर्दाबाद के नारों तक सीमित हो गया है। आज देश के युवा शिक्षित वर्ग पर राष्ट्र के निर्माण का विशाल उत्तरदायित्व है किंतु बेरोजगारी, निराशा, भौतिकतावाद और अपराधिक राजनीति के दुष्प्रभावों में फँसकर वे अपने पवित्र उद्देश्य एवं सकारात्मक लक्ष्य से विमुख हो बैठे हैं। यद्यपि आज संसद में शिक्षित युवाओं की संख्या बढ़ी है किंतु अभी सभी अर्थो में छात्रों को अपना काम करना शेष है। हमें छात्र राजनीति व छात्र आन्दोलनों के स्वर्णिम इतिहास और सकारात्मक प्रयासों से प्रेरणा लेनी होगी तभी जाकर वर्तमान समय में संक्रमित हो रही राजनीति में युवा वर्ग प्रजातंन्त्र के कुछ श्रेष्ठ मानकों को स्थापित करने में सफल होगा।

सन्दर्भ-

1. दि बंगाली, कलकत्ता, 12 जून, 1880
2. एस0 आर0 मेहरोत्रा, द एमरजेन्स आफ दि इण्डियन नेशनल कांग्रेस (जार्ज एलन एण्ड अन्विन लि0, लन्दन), पृ0 262
3. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, ए नेशन इन दि मेकिंग, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन, 1925, पृ0 41
4. उद्घृत : डॉ0 ताराचन्द, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, खण्ड-2 (प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रलय, भारत सरकार, नई दिल्ली,1984) पृ0 478
5. फिलिप जी0 अल्टबाच, स्टूडेन्ट पोलिटिक्स इन बम्बई, (एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई,1968, पृ0 57
6. माइनर वीनर, द पोलिटिक्स ऑफ स्केरसिटी यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो, 1962, पृ0 161
7. जार्ज एस0 अरूनदाले, इंडियन स्टूडेन्ट्स एण्ड पोलिटिक्स, अडयार पैम्फलेट, 44, मद्रास, अगस्त, 1914, पृ01
8. वही, पृ0 4
9. वही, पृ0 15-16
10. विश्वमित्र उपाध्याय, विदेशो में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन प्रथम-भाग, प्रगतिशील जन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986, पृ0 54
11. इंडियन सोशियोलाजिस्ट की माइक्रोफिल्स नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, तीनमूर्ति भवन, नई दिल्ली, में उपलब्ध है।
12. डॉ0 गणेशीलाल वर्मा, श्याम जी कृष्ण वर्मा, प्रकाशन विभाग,सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली, 2002, पृ0 32-33
13. पोलिटिकल ए0 डी0 सी0 इंडिया आफिस का 24 दिसम्बर, 1905 का नोट। फाइल नं0 308, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, उद्घृतः विश्वमित्र उपाध्याय,पूर्वो, पृ064
14. ज्ञातव्य हो कि गाँधीजी 1907-08 में लगभग 7-8 माह इंडिया हाउस में रहे।
15. रिपोर्ट सेडिसन कमेंटी 1918, रौलट रिपोर्ट, न्यू एज पब्लिशर्स, कलकत्ता, 1974, पृ04
16. जेम्स कैम्पबेल कार, पोलिटिकल ट्रबल इन इंडिया, इंडियन एडिसन 1907-1917, पृ0 157 व डॉ0 गणेशी लाल वर्मा,पूर्वो पृ0 44
17. धनंजय कीर, वीर सावरकर, पापुलर प्रकाशन, बम्बई, 1988, पृ018
18. वही
19. वही
20. शिवकुमार गोयल, वीर सावरकर (प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992) पृ0 17
21. धनंजय कीर, पूर्वो, पृ0 56
22. सुन्दर लाल ने ''भारत में अंग्रेजी राज'' नामक पुस्तक दो खण्डों में लिखी है जिसका पहला संस्करण 18 मार्च 1929 को प्रकाशित हुआ जिसपर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया। इसके विरोध में महात्मा गांधी ने ''यंग इण्डिया'' में कई सम्पादकीय लिखे। गांधी जी स्वयं पुस्तक का संस्करण छपवाने को तैयार थे जिस पर प्रकाशक का नाम स्वयं गांधी जी का

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका : संयुक्त प्रान्त में सकारात्मक छात्र राजनीति के विशेष संदर्भ में

डॉ० रजनी कान्त श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, विज्ञान विभाग, आर०एम०पी०पी०जी० कालेज, सीतापुर

www.shodh.net

होगा। सन् 1937 में संयुक्त प्रान्त में प्रथम कांग्रेस मंत्रीमण्डल ने पुस्तक से प्रतिबन्ध हटा लिया। प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसार मंत्रालय द्वारा दो खण्डों में इसका प्रथम संस्करण जुलाई 1960 में निकाला गया।

23. बैजनाथ सिंह,''उनके जीवन का एक ढंग था'',सुधीर विद्यार्थी(सम्पादित) धनंजय कीर, वीर सावरकर, पापुलर प्रकाशन, बम्बई, 1988, पृ085
24. लीडर, इलाहाबाद, 30 दिसम्बर, 1913
25. सेडिशन कमेटी की रिपोर्ट, धनंजय कीर, वीर सावरकर, पापुलर प्रकाशन, बम्बई, 1988, पृ0 91
26. प्रताप, कानपुर, 11 जनवरी, 1914
27. फिलिप जी अल्टवाच, धनंजय कीर, वीर सावरकर, पापुलर प्रकाशन, बम्बई, 1988, पृ058
28. जगदीश चन्द्र दीक्षित, यू0पी0 लजिस्लेटिव कौसिंल 1910-1920, सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग, विभाग, उ0प्र0, 1987, पृ0 79
29. वही, पृ0 106
30. उद्घृत: वही
31. वही
32. प्रताप, कानपुर 26 जनवरी, 1917
33. उद्घृत: जगदीश चन्द्र दीक्षित, पूर्वो, पृ0 162-63
34. विस्तृत जानकारी: 4 मार्च, 1919 को संयुक्त प्रान्त की विधान परिषद में सी0 आई0 चिन्तामणि द्वारा पूछे गये प्रश्न (कार्यसूची का प्रश्न संख्या-38) का उत्तर। उद्घृत:जगदीश चन्द्र दीक्षित, धनंजय कीर, वीर सावरकर, पापुलर प्रकाशन, बम्बई, 1988, पृ0 120-124
35. डॉ0 ताराचन्द्र, हिस्ट्री आफ दि फ्रीडम मूवमेन्ट इन इंडिया, वाल्यूम3 पब्लिकेशन डिवीजन, मिनिस्ट्री आफ इन्फारमेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग, गवर्नमेन्ट आफ इंडिया, दिल्ली, 1983, पृ0 494
36. पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त के भाषणों का संकलन: शब्द: 1924-1929, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उ0 प्र0 लखनऊ, 1987, पृ0 37
37. वही, पृ0 40
38. ज्ञानेन्द्र पांडे, द एसेन्डेन्सी ऑफ द कांग्रेस इन उत्तर प्रदेश : 1926-34, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1978, पृ085-86
39. उद्घृत : जगमोहन सिंह व चमन लाल, भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003) पृ0229-32
40. डॉ0 एन0 सी0 मेहरोत्रा एवम् डॉ0 मनीषा टन्डन, स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान, शहीद-आजम पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ट्रस्ट,शाहजहांपुर, 1995, पृ0170
41. मन्मथनाथ गुप्त, भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1986, पृ0 321
42. वही, पृ0 321-22
43. मन्मथनाथ गुप्त, धनंजय कीर, वीर सावरकर, पापुलर प्रकाशन, बम्बई, 1988, पृ0 327
44. वही, पृ0 329
45. वही
46. वही, पृ0 330
47. वही
48. वीरेन्द्र कुमार वीरू, भारत छोड़ो आन्दोलन के शहीद, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ0 104-105
49. वही पृ0 338
50. स्वतन्त्रता सेनानी बसन्तलाल खन्ना का लेख ''सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन की कुछ अविस्मरणीय स्मृतियाँ'',एक झलक, शाहजहाँपुर, अगस्त, 1985
51. विस्तृत जानकारी हेतु देखे : डॉ0 एन0 सी0 मेहरोत्रा व डॉ0 मनीषा टण्डन, पूर्वो पृ0 196-99
52. वीरेन्द्र कुमार वीरू, भारत छोड़ो आन्दोलन के शहीद, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ0 295
53. वही, पृ0 296

SHODH SANCHAYAN